iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 14 **Issue:** I **Month of publication:** January 2026

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2026.76998

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 14 Issue I Jan 2026- Available at www.ijraset.com

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व: एक सामाजिक-आर्थिक अध्ययन

डॉ. गुन्जा माहोरे
सहायक प्राध्यापक , शासकीय महाविद्यालय जुन्नारदेव जिला छिंदवाड़ा

***Abstract* (सारांश): यह शोध ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि की केंद्रीय भूमिका को सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में विश्लेषित करता है। कृषि ग्रामीण आबादी की आजीविका का मुख्य आधार होने के साथ-साथ रोजगार, आय सृजन, खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण उद्योगों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कृषि क्षेत्र के सुदृढ़ होने से ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी में कमी, सामाजिक स्थिरता तथा आर्थिक स्वावलंबन को बढ़ावा मिलता है। इसके अलावा, कृषि तकनीकों में नवाचार, सिंचाई सुविधाएँ, वित्तीय समावेशन और बेहतर बाज़ार संरचना ग्रामीण विकास की गति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। समग्र रूप से यह शोध दर्शाता है कि कृषि का सतत और समावेशी विकास ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए अनिवार्य है।**

***Keywords* (मुख्य शब्द): ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि विकास, सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण, रोजगार सृजन, खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण उद्योग, तकनीकी नवाचार, वित्तीय समावेशन, सतत विकास, किसान कल्याण।**

I. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

भारत एक कृषि प्रधान देश है, भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। जहाँ ग्रामीण जीवन की आधारशिला कृषि है। ग्रामीण भारत की लगभग 60% से अधिक जनसंख्या कृषि एवं इससे जुड़ी गतिविधियों पर निर्भर है। कृषि केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक संरचना का मूल आधार भी है। यह अध्ययन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बहुआयामी महत्व को सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से स्पष्ट करता है। वास्तव में, कृषि हमारे देश में केवल जीविकोपार्जन का साधन या उद्योग-धन्धा ही नहीं है, बल्कि अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। देश के उद्योग-धन्धे, विदेशी व्यापार, मुद्रा अर्जन, विभिन्न योजनाओं की सफलता एवं राजनीतिक स्थायित्व भी कृषि पर ही निर्भर हैं। एक बार स्वर्गीय पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि "कृषि को सर्वाधिक प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। यदि कृषि असफल रहती है तो सरकार एवं राष्ट्र दोनों ही असफल रहते हैं।"

A. शोध के उद्देश्य *(Objectives of the Study)*

1) ग्रामीण जीवन में कृषि की भूमिका को समझना।
2) कृषि के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
3) ग्रामीण क्षेत्र में कृषि आधारित आजीविका के स्वरूप की जांच करना।
4) कृषि विकास हेतु आवश्यक बजटीय प्रावधानों का प्रस्ताव देना।
5) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
6) रोजगार, आय एवं जीवन स्तर में कृषि के योगदान का मूल्यांकन करना।
7) ग्रामीण कृषि से संबंधित सरकारी योजनाओं और उनकी प्रभावशीलता का विश्लेषण करना।

II. कृषि का सामाजिक महत्व (SOCIAL IMPORTANCE OF AGRICULTURE)

कृषि न केवल आर्थिक गतिविधि है, बल्कि यह भारतीय समाज की रीढ़ भी है। इसका समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है। नीचे कृषि के सामाजिक महत्व को चार मुख्य बिंदुओं में समझाया गया है]

A. सामाजिक पहचान *(Social Identity)*

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि ही अधिकांश लोगों की पहचान है। किसान को समाज में "अन्नदाता" के रूप में देखा जाता है, जिससे उसे विशेष सम्मान प्राप्त होता है। किसी व्यक्ति की जातीय, पारिवारिक या क्षेत्रीय पहचान भी उसकी कृषि पृष्ठभूमि से जुड़ी होती है।

©IJRASET: All Rights are Reserved

B. संस्कृति एवं परंपरा *(Culture and Tradition)*

कृषि भारतीय त्योहारों, रीति-रिवाजों और लोक परंपराओं का मूल आधार है। फसल कटाई से जुड़े त्योहार जैसे पोंगल, बैसाखी, ओणम और मकर संक्रांति कृषि से जुड़े होते हैं। पारंपरिक गीत, नृत्य और लोककथाएँ भी कृषि जीवनशैली से प्रेरित हैं।

C. सामुदायिक सहयोग *(Community Cooperation)*

कृषि कार्य सामूहिक सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है, जैसे– बुआई, सिंचाई और कटाई में गाँव के लोग मिलकर काम करते हैं। सहकारी समितियाँ, किसान मंडल और ग्राम सभाएँ सामाजिक एकता और निर्णय-निर्माण की भावना को सशक्त बनाती हैं। प्राकृतिक आपदाओं के समय किसान एक-दूसरे की मदद करके सामाजिक समरसता का परिचय देते हैं।

D. शैक्षणिक प्रभाव *(Educational Impact)*

कृषि पर आधारित शिक्षा (जैसे– कृषि विज्ञान, पशुपालन, बागवानी) ग्रामीण युवाओं को रोजगार और नवाचार की दिशा देती है। स्कूलों और कॉलेजों में कृषि से संबंधित विषय छात्रों को ग्रामीण जीवन और प्राकृतिक संसाधनों की समझ विकसित करने में मदद करते हैं। किसानों की साक्षरता और प्रशिक्षण कार्यक्रमों से ग्रामीण शिक्षा का स्तर सुधरता है।

कृषि केवल भोजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन की संरचना का अभिन्न अंग है। यह हमारी पहचान, संस्कृति, सहयोग और शिक्षा का आधार बनाकर समाज को स्थायित्व और विकास प्रदान करती है।

III. कृषि का आर्थिक महत्व (ECONOMIC IMPORTANCE OF AGRICULTURE)

भारत जैसे विकासशील देश में कृषि न केवल जीवनयापन का आधार है, बल्कि यह देश की आर्थिक संरचना की नींव भी है। कृषि का आर्थिक महत्व निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं से समझा जा सकता है

A. रोजगार सृजन *(Employment Generation)*

कृषि क्षेत्र देश की कुल जनसंख्या के एक बड़े हिस्से को रोजगार उपलब्ध कराता है। प्रत्यक्ष रूप से किसान, खेतिहर मजदूर एवं कृषिभूमि पर काम करने वाले श्रमिक कृषि से जुड़े होते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से कृषि यंत्र, खाद-बीज उद्योग, परिवहन व विपणन आदि क्षेत्रों में भी रोजगार उत्पन्न होते हैं।

B. स्थानीय बाजारों को समर्थन *(Support to Local Markets)*

कृषि उत्पादन जैसे अनाज, फल, सब्ज़ी, दुग्ध आदि स्थानीय हाट-बाज़ारों में बिकते हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। कृषि से जुड़ी वस्तुएँ जैसे खाद, बीज, कृषि यंत्र आदि की मांग से स्थानीय व्यापारियों को आय प्राप्त होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्थानीय व्यापार कृषि पर निर्भर होता है।

C. आय का प्रमुख स्रोत *(Primary Source of Income)*

ग्रामीण भारत की अधिकांश जनसंख्या की आजीविका कृषि पर निर्भर है। फसल उत्पादन, पशुपालन, मत्स्य पालन एवं बागवानी जैसी कृषि सहायक गतिविधियाँ आय के मुख्य साधन हैं। सरकार की विभिन्न योजनाएँ (जैसे न्यूनतम समर्थन मूल्य, कृषि बीमा योजना) किसानों की आय को सुरक्षित करती हैं।

D. स्थानीय संसाधनों का उपयोग *(Utilization of Local Resources)*

कृषि स्थानीय जल, मिट्टी, जैविक उर्वरक और परंपरागत ज्ञान का उपयोग करती है। इससे बाहरी संसाधनों पर निर्भरता घटती है और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है। परंपरागत खेती पद्धतियाँ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में मदद करती हैं।

कृषि न केवल देश के भोजन की आपूर्ति सुनिश्चित करती है, बल्कि यह आर्थिक विकास, रोजगार, व्यापार और संसाधनों के कुशल उपयोग का भी आधार है। अतः कृषि का सशक्तिकरण देश की समृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है।

IV. वर्तमान समस्याएँ (CURRENT CHALLENGES IN AGRICULTURE)

भारत में कृषि आज भी लाखों लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत है, परंतु यह कई गंभीर चुनौतियों से जूझ रही है। ये समस्याएँ न केवल किसानों की स्थिति को प्रभावित करती हैं, बल्कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी संकट में डालती हैं। नीचे वर्तमान कृषि की प्रमुख समस्याओं का वर्णन किया गया है

E. सिंचाई की कमी *(Lack of Irrigation)*
भारत की कृषि आज भी मानसून पर अत्यधिक निर्भर है। सीमित सिंचाई साधनों के कारण सूखे या अनियमित वर्षा वाले क्षेत्रों में फसल उत्पादन प्रभावित होता है। ट्यूबवेल, नहर और वर्षा जल संचयन जैसी सिंचाई प्रणालियाँ कई स्थानों पर उपलब्ध नहीं हैं या पुरानी हो चुकी हैं।

F. उन्नत बीज व तकनीक की अनुपलब्धता *(Lack of Improved Seeds and Technology)*
अधिकतर छोटे किसान परंपरागत बीजों का प्रयोग करते हैं, जिससे उत्पादन क्षमता सीमित रहती है। आधुनिक कृषि यंत्र, जैविक खाद, ड्रिप सिंचाई, और स्मार्ट खेती जैसी तकनीकों की जानकारी और पहुँच सीमित है। अनुसंधान केंद्रों और किसानों के बीच सूचना का अभाव है।

G. 3. बाजार तक सीमित पहुँच *(Limited Access to Markets)*
किसान अक्सर अपने उत्पाद को उचित मूल्य पर नहीं बेच पाते क्योंकि मंडी तक पहुँच कठिन होती है। बिचौलियों के कारण किसान को उसका उचित लाभ नहीं मिल पाता। भंडारण और कोल्ड स्टोरेज की कमी के कारण फसलें खराब हो जाती हैं।

H. कर्ज का बोझ व आत्महत्या की घटनाएँ *(Debt Burden and Farmer Suicides)*
कृषि में अनिश्चितता के कारण किसान बैंक या साहूकारों से कर्ज लेते हैं। फसल खराब होने या मूल्य न मिलने की स्थिति में वे कर्ज चुका नहीं पाते। यह आर्थिक तनाव कई बार आत्महत्या जैसे दुखद कदम उठाने का कारण बनता है।

I. जलवायु परिवर्तन का प्रभाव *(Impact of Climate Change)*
तापमान में वृद्धि, वर्षा के पैटर्न में बदलाव और प्राकृतिक आपदाएँ कृषि को बुरी तरह प्रभावित कर रही हैं। कीट और बीमारियों में वृद्धि भी जलवायु परिवर्तन की वजह से हो रही है। इससे उत्पादन में गिरावट और कृषि लागत में वृद्धि हो रही है।
कृषि क्षेत्र को इन चुनौतियों से उबारने के लिए ठोस नीति, आधुनिक तकनीक, किसान शिक्षा, और सरकारी सहयोग की आवश्यकता है। सतत एवं समावेशी विकास ही इसका समाधान है।

V. कृषि सुधार की संभावनाएँ (OPPORTUNITIES FOR AGRICULTURAL REFORM)

भारत की कृषि आज बदलाव के मोड़ पर खड़ी है। जहां एक ओर इसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, वहीं दूसरी ओर इसमें अनेक सुधार की संभावनाएँ भी मौजूद हैं। ये सुधार कृषि को अधिक लाभकारी, टिकाऊ और समावेशी बना सकते हैं। नीचे कुछ प्रमुख संभावनाओं का विवरण किया गया है

J. जैविक खेती को बढ़ावा *(Promotion of Organic Farming)*
रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से भूमि की उर्वरता घट रही है। जैविक खेती पर्यावरण-संवेदनशील, स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित और अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग वाली पद्धति है। सरकार द्वारा जैविक खेती के लिए प्रशिक्षण, प्रमाणन और विपणन में सहयोग दिया जा सकता है।

K. कृषि आधारित उद्योगों का विकास *(Development of Agro-Based Industries)*
कृषि उत्पादों की प्रोसेसिंग (जैसे खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी, पैकेजिंग) से किसानों को अतिरिक्त आमदनी हो सकती है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और कृषि उत्पादों का मूल्यवर्धन होगा। छोटे स्तर पर शुरू किए गए उद्योग आत्मनिर्भर भारत की दिशा में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

L. महिला किसानों की भागीदारी *(Participation of Women Farmers)*
महिलाएँ कृषि कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी उन्हें "किसान" के रूप में मान्यता कम मिलती है। उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और [8]निर्णय-निर्माण में भागीदारी दिलाकर कृषि को सशक्त बनाया जा सकता है। महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को कृषि से जोड़ा जा सकता है।

M. युवा पीढ़ी को कृषि में आकर्षित करना *(Attracting Youth to Agriculture)*

कृषि को पारंपरिक पेशे से आधुनिक स्टार्टअप और उद्यमिता के रूप में प्रस्तुत किया जाए। कृषि में नवाचार, स्मार्ट खेती, ड्रोन तकनीक, हाइड्रोपोनिक्स आदि युवाओं के लिए प्रेरणादायक हो सकते हैं। कृषि शिक्षा और कृषि प्रौद्योगिकी संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

N. डिजिटलीकरण व तकनीक का उपयोग *(Digitization and Use of Technology)*

स्मार्टफोन, मोबाइल ऐप्स, किसान पोर्टल, ई-नाम (e-NAM) जैसे डिजिटल साधनों से किसानों को बाजार, मौसम, बीमा और मूल्य की जानकारी मिल सकती है। ड्रोन, GIS, सेंसर्स और सटीक खेती (precision farming) कृषि उत्पादकता को बढ़ा सकते हैं। डिजिटल भुगतान प्रणाली से पारदर्शिता और किसान की आमदनी में सुधार संभव है।

कृषि सुधार की ये संभावनाएँ भारत को आत्मनिर्भर और सतत कृषि व्यवस्था की ओर ले जा सकती हैं। इन उपायों से न केवल किसान सशक्त होंगे, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी नया जीवन संचार होगा।

VI. अपेक्षित परिणाम (EXPECTED OUTCOMES)

यदि कृषि क्षेत्र में उपरोक्त सुधारों और प्रयासों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो निम्नलिखित सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं

A. किसानों की आय में वृद्धि *(Increase in Farmers' Income)*

जैविक खेती, मूल्य वर्धन और कृषि-उद्योग से अतिरिक्त आमदनी के स्रोत खुलेंगे। उचित मूल्य, सीधी बिक्री और डिजिटल प्लेटफॉर्म से बिचौलियों की भूमिका कम होगी।

B. कृषि में आत्मनिर्भरता *(Self-Reliance in Agriculture)*

स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग और आधुनिक तकनीकों की मदद से किसान आत्मनिर्भर बनेंगे। उन्नत बीज, सिंचाई और डिजिटल जानकारी से उत्पादकता में वृद्धि होगी।

C. रोजगार के नए अवसर *(New Employment Opportunities)*

कृषि-आधारित उद्योगों, खाद्य प्रसंस्करण, जैविक खेती, और स्टार्टअप्स में रोजगार बढ़ेगा। ग्रामीण युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर आजीविका के साधन उपलब्ध होंगे।

D. समावेशी और टिकाऊ विकास *(Inclusive and Sustainable Development)*

महिला किसानों की भागीदारी और डिजिटल समावेशन से समाज में समानता आएगी। पर्यावरण अनुकूल खेती से भूमि, जल और वायु की गुणवत्ता में सुधार होगा।

E. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सशक्तिकरण *(Strengthening Rural Economy)*

बाजारों तक सीधी पहुँच और तकनीकी ज्ञान से किसानों की क्रय शक्ति बढ़ेगी। गाँवों में आधारभूत सुविधाओं, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार की संभावना बढ़ेगी।

F. कृषि को आधुनिक और आकर्षक पेशा बनाना *(Making Agriculture Modern and Attractive)*

युवा पीढ़ी कृषि को एक नवाचार-आधारित, सम्मानजनक और लाभकारी पेशे के रूप में अपनाएगी। तकनीकी अपनाने से कृषि कार्य अधिक कुशल और वैज्ञानिक होंगे।

कृषि सुधारों के माध्यम से एक समृद्ध, आत्मनिर्भर, और आधुनिक कृषि व्यवस्था की नींव रखी जा सकती है। यह न केवल किसानों की स्थिति को सुदृढ़ करेगा, बल्कि पूरे देश के सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देगा।

VII. सुझाव (RECOMMENDATIONS)

A. कृषि ऋण की आसान उपलब्धता

किसानों को उचित ब्याज दर पर समय पर ऋण उपलब्ध कराना बिचौलियों और साहूकारों पर निर्भरता को कम करना डिजिटल बैंकिंग और किसान क्रेडिट कार्ड को प्रोत्साहन

B. ग्राम स्तर पर कोल्ड स्टोरेज सुविधाएं
फल, सब्जियाँ और दुग्ध उत्पादों के भंडारण की सुविधा फसल बर्बादी को रोकना ग्रामीण स्तर पर सहकारी भंडारण केंद्रों की स्थापना

C. किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम
उन्नत कृषि तकनीकों, जैविक खेती, और बाजार रणनीतियों पर प्रशिक्षण सरकारी और निजी संस्थाओं द्वारा नियमित कार्यशालाएँ युवाओं और महिला किसानों को विशेष प्रोत्साहन

D. फसल बीमा की पहुँच
प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान की भरपाई सभी प्रकार की फसलों को बीमा के अंतर्गत लाना बीमा दावे की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाना

E. महिला किसानों के लिए विशेष योजनाएँ
महिला स्व-सहायता समूहों को कृषि यंत्र, बीज और प्रशिक्षण में प्राथमिकता भूमि के अधिकारों में महिलाओं की हिस्सेदारी महिला कृषक क्रेडिट कार्ड और वित्तीय सहायता योजनाएँ

VIII. निष्कर्ष (CONCLUSION)

यह परियोजना ग्रामीण भारत की कृषि आधारित संरचना को समझने का प्रयास है, जो भविष्य में बेहतर नीतियों, संसाधन आवंटन और ग्रामीण विकास की योजना निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकती है। कृषि केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने के लिए कृषि के विकास और किसान कल्याण पर ध्यान देना आवश्यक है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कृषि में सुधार, नवाचार और नीतिगत हस्तक्षेप ग्रामीण समाज के विकास में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ सूची (REFERENCES)

[1] भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय। (2023)। भारतीय कृषि पर वार्षिक प्रतिवेदन। नई दिल्ली: कृषि मंत्रालय प्रकाशन।
[2] योजना आयोग। (2014)। भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि विकास। नई दिल्ली: भारत सरकार।
[3] देसाई, वी. (2020)। भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था। मुंबई: हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
[4] कुमार, आर. (2019)। भारत में कृषि का सामाजिक प्रभाव। भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, 56(2), 112–129।
[5] शर्मा, के. के. (2017)। ग्रामीण विकास और कृषि के बीच संबंध। ग्रामीण अध्ययन शोधपत्रिका, 21(3), 88–101।
[6] खाद्य और कृषि संगठन (FAO)। (2021)। ग्रामीण विकास में कृषि की भूमिका। रोम: एफएओ प्रकाशन।
[7] भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)। (2022)। कृषि ऋण और ग्रामीण विकास पर वार्षिक रिपोर्ट। मुंबई: आरबीआई प्रकाशन।
[8] सक्सेना, एन. सी. (2015)। ग्रामीण गरीबी और कृषि विकास। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 50(42), 53–61।
[9] भारत की जनगणना। (2011)। ग्रामीण जनसंख्या और कृषि पर सांख्यिकीय आंकड़े। नई दिल्ली: भारत सरकार।
[10] विश्व बैंक। (2020)। भारत में समावेशी विकास हेतु कृषि का परिवर्तन। वॉशिंगटन, डी.सी.: विश्व बैंक।
[11]

©IJRASET: All Rights are Reserved

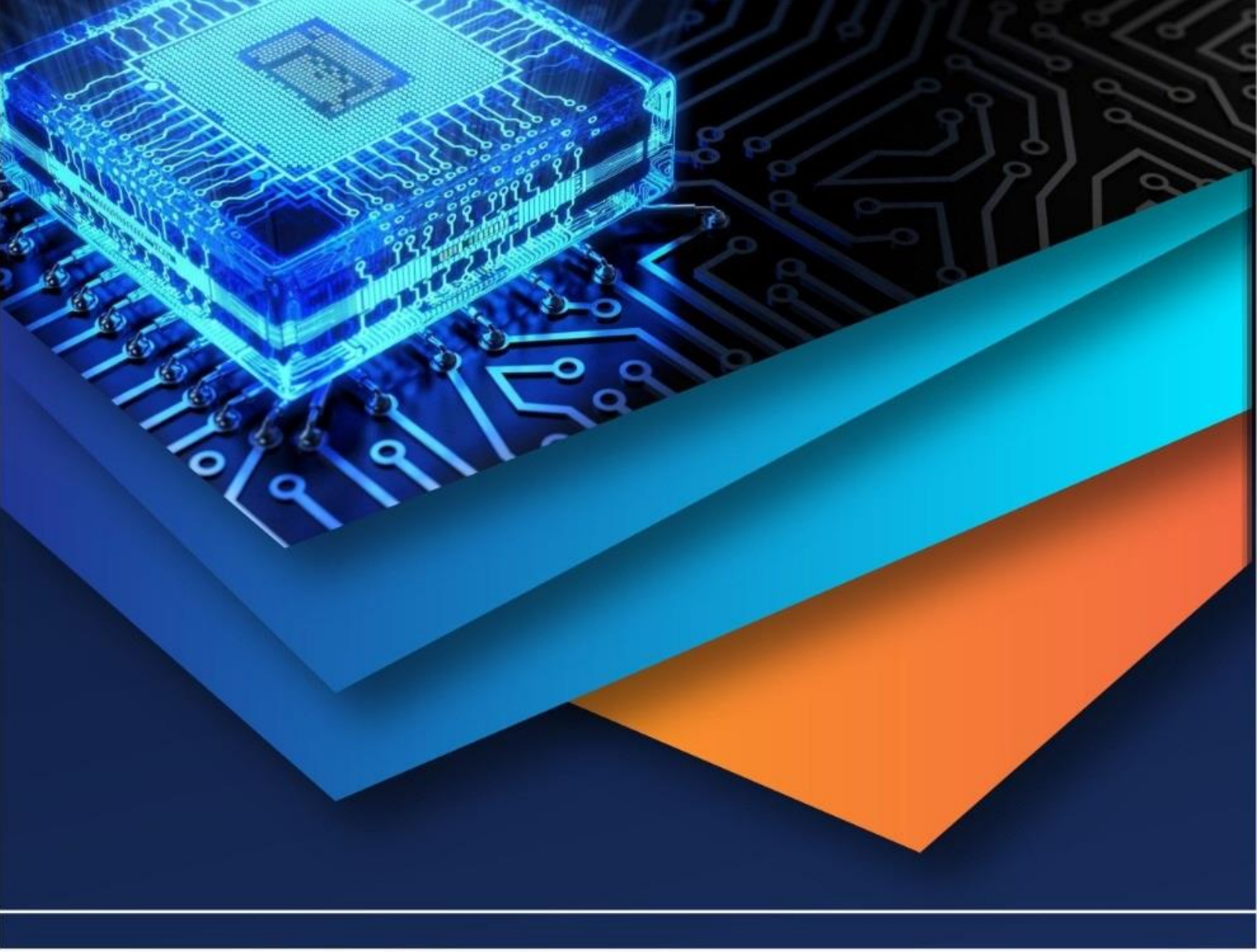

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)